TOPIC ..... DATE.....

Name - AREEBA NASEEM

Roll No- SKt/19/27

Paper Name - Acting & Script Writing

Paper Code - 12133901

Year - IInd Year

Sem = IIIrd Sem

TOPIC .... DATE..............................

⇒ अभिनय कितने प्रकार के होते हैं।

अभिनय चार प्रकार के होते हैं।

- आङ्गिक
- वाचिक
- सात्विक
- आहार्य

अभिनय के इनही प्रकारों का प्रयोग मे सामाजिक को लगाता है कि हम वस्तुतः उस जमाने (युग) और परिस्थित में पहुंचकर पात्रो के व्यवहारो का अनुभव कर रहे है।

- आङ्गिक अभिनय-
  अभिनेताओ के द्वारा हाथ, पैर, कमर सिर आदि की चेष्टाओ के रूप मे प्रदर्शित किया जाता है।
  इनके तीन भेद है- • शारीरिक
  • मुखगत
  • चेष्टाकृत
  इनके भी भेदपदो में अभिनय का वैविध्य ज्ञात होता है।

- वाचिक अभिनय-
  इनके अंतर्गत काव्य के गुण, छन्दोविधान, दोष, अलंकार तथा भाषा निहित है। अभिनेताओं के द्वारा नाटक का अर्थ इसी अभिनय के द्वारा प्रकट होता है। संस्कृत तथा प्राकृत भेदो का विवेचन इसी अभिनय कि दृष्टी से किया था कुछ प्राकृत में शौर सेनी महाराष्ट्री मागधी आदि रूपों का प्रयोग करेगा।

TOPIC ..... DATE .....

सात्विक अभिनय -
जब किसी भाव की अभिव्यक्ति होती है उसे सात्विक अभिनय कहते है शरीर में सात्विक की दृष्टि से स्वभावतः जन्म लेने के कारण ये 'सात्विक' गुण य अभिनय कहलाते है जिस से रसोद्भावन में सुविधा होती है।

आहार्य अभिनय -
किसी व्यक्ति की वेशभूषा कि सजावट व पहनावे को आहार्य अभिनय कहते है जिसे भारत में नेपथ्य - रचना कहा है जिसे भारत मे नेपथ्य - रचना पात्रों मे रूप मे समझा जाता है इसके पुरस्त अलंकार, अंगरचना और संजीव मे चार प्रकार कहे गए है।
इस अभिनय का सम्बन्ध रंगमच से है क्योकि इसका विधान नेपथ्य मे पात्रो की सजावट के रूप मे होता है। इस प्रकार अभिनय के विविध पक्षो का निरूपण हुआ है।
संस्कृति नाट्यशास्त्र के रंगमच की व्यावस्था पर विस्तृत विचार किया है विष्णुधर्मोत्तरपुराण संगीतमकरन्द, में भी नाट्याभिनय के लिए रंगमच के आकार - प्रकार का विवरण है नाट्यशास्त्र तो इस विषय का महाकोश है।

Manshakumari